



आज हम इन कर्मन्द्रियों के वश हैं और इतना ज्यादा वश हैं कि हम न चाहते हुए भी गलती पर गलती करते जा रहे हैं और जब परेशानी आ रही है तो डिप्रेशन-सा होता जा रहा है। क्या होगा, कैसा होगा

सुकून किसमें

जीवन में अगर ये नहीं होगा तो हम क्या कर पायेंगे.....

मनुष्य की एक नेचर है कि वो एक समय में संसार में बहुत कुछ पाना चाहता है। माना उसको पूरा संसार चाहिए। जब वो संसार में सबसे ऊब जाता है, तो सबको छोड़ना चाहता है। फिर उसको कुछ नया चाहिए। सन्यास भी आनंद की एक खोज है, सुख की एक तलाश है। क्योंकि जितने भी संत व महात्मा बने, उन्होंने समाज से ऊबना या जिनके साथ हैं, उनके साथ असहज महसूस करना, फिर सहज जीवन के लिए तलाश करना यही उनकी समझ रही। लेकिन सुकून वहाँ भी नहीं। तपस्यायें इतनी सालों तक करने के बाद भी सुकून नहीं मिला कि कहीं गलत तलाश तो नहीं कर रहे हैं या कहीं गलत प्रयास तो नहीं कर रहे हैं। ये दोनों बड़े विचारणीय प्रश्न हैं। क्या लगता है कि व्यक्ति को सुकून स्थान देता है या स्थिति देती है? कहावत भी है, कि खुशी के लिए काम करोगे तो कभी खुश नहीं रह सकते, लेकिन खुश होकर काम करोगे तो आपको उस कार्य में सुख मिलेगा। अब इस कहावत को अगर चरितार्थ करना है तो इसपर काम करना होगा। साधन,

सुविधा, शौक, सम्पर्क सबके पास है, तो निश्चित रूप से सबको अपनी हसरतें पूरी करने का हक है। लेकिन इन हसरतों का कोई ओर छोर नहीं है। तो सुकून शब्द जब बना होगा तो उसको बोलने वाला या महसूस करने वाला उसको उच्चारण करता होगा तो क्या किसी साधन को सामने देखकर करता है या खाने वाली चीज को देखकर करता है या किसी स्थान को देखकर करता है। ऐसा तो नहीं है ना! चीज में सुकून नहीं है, खाने वाला सुकून महसूस कर रहा है। इसका मतलब सुकून हमारे स्वरूप में है। हम सुकून से ही बने हैं। लेकिन साधनों के या कहें देह और देह से लगी हुई चीजों से जुड़ने के कारण हमारा मन चीजों को इकट्ठा करने में लग गया जिसमें हमारे अंदर की शांति और सुकून जाते रहे और हमें पता भी नहीं चला। समय परिवर्तन हो रहा है। आज भी हम सुधरे नहीं हैं। निश्चित रूप से बाहरी आकर्षण में हम जाते हैं। जाना अच्छा लगता है, सुखदायी लगता है, सुकून भरा लगता है, कारण, कि हमारे अंदर का सुकून बाहरी चीजों से रिफ्लेक्ट होता है। लेकिन परमानेंट सुकून जो आत्मा की वास्तविक ज़रूरत है, वो

तो सिर्फ और सिर्फ अपने आप को पहचानने से ही मिलती है। इस दुनिया के जितने भी साधन हैं, सम्पर्क हैं, वो सबकुछ आने वाले समय में काम नहीं आयेंगे। काम आयेगा तो सिर्फ सुकून। गहरी शांति। यही काम आयेंगे। लेकिन भाव अभी भी हमारा बदल नहीं रहा है। परमात्मा के सुनाये गये महावाक्यों में बार-बार इस स्थिति को दर्शाया गया है कि हम सभी मास्टर शांति के सागर हैं, मास्टर सुकून धारी हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, बाकी साधन हमारे प्रयोग के लिए हैं।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

आज हम इन कर्मन्द्रियों के वश हैं और इतना ज्यादा वश हैं कि हम न चाहते हुए भी गलती पर गलती करते जा रहे हैं और जब परेशानी आ रही है तो डिप्रेशन-सा होता जा रहा है। क्या होगा, कैसा होगा जीवन में। अगर ये नहीं होगा तो हम क्या कर पायेंगे। तो सबसे पहला कार्य हमको करना है कि अपने आप को जीतना, अपने मन को जीतना, ऑर्डर में बैठना, ऑर्डर में चलना, कर्मन्द्रियों को ऑर्डर में चलाना। एक बार ऑर्डर किया तो वो शांत हो जायें। सुख से रहना हमारी नेचर है। लेकिन जब वो व्यक्ति राजा जनक की तरह होगा तो। जैसे राजा जनक के लिए कहा जाता है कि उन्होंने अपनी आत्मिक स्थिति या अपनी ज्योति को जगा लिया था इसलिए वे सदा सुख और शांति में रहते थे और राज्य कारोबार भी शांति से चलता था। मैं आत्मा राजा हूँ और कर्मन्द्रियाँ हमारी कर्मचारी हैं, ये स्थिति ही हमें सुकून देगी हर परिस्थिति में। यही हमारी नेचर है, यही हम हैं, बस हमको यही करना है और सुकून से रहना है।

जीवन दर्शन

सर्वश्रेष्ठ योगी

उनके जीवन में एक चुम्बकीय शक्ति थी, वह इस कारण से थी कि उन्होंने सबको शिशुवत समझा। उनकी यह प्रत्यक्ष अनुभूति थी। व्यवहार उनका ऐसा था जैसे वो सचमुच में साक्षात् जगदम्बा थीं, चाहे उनकी आयु कुछ भी हो। आप सोचिए, यह देह अभिमान खत्म हो गया ना! जब आयु का भान नहीं, पुरुष है, स्त्री है इसका भान नहीं, शत्रु है या मित्र है इसका भान नहीं। किसी भी चीज का देह अभिमान नहीं तो वह योगी होगा ना! बिना योग के देह अभिमान कैसे चला गया? योग की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। योगबल से ही विजय प्राप्त होती है। विजयमाला का मणका बनता है, तो यह मम्मा की जिन्दगी में प्रैक्टिकल दिखता था।

महोदय नमो देवा हरवर्षी



जबलपुर-नेपियर टाउन (म.प्र.)। 'यूथ फॉर ग्लोबल पीस प्रोजेक्ट-2021' के अंतर्गत ब्रह्मकुमारीज एवं नव ज्योति नशा मुक्ति केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में 'व्यसन मुक्त भारत अभियान रैली' निकाली गई। इस मौके पर डॉ. कु. प्रिया, डॉ. कु. लखन, डॉ. कु. रवि, डॉ. कु. ओमप्रकाश, शंकर शरण भाई सहित बड़ी संख्या में भाई बहनें उपस्थित रहे।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : मेरा नाम दर्शिका है। मेरी पूरी फैमिली पिछले दस वर्षों से इस विश्व विद्यालय से जुड़ी है। मेरा अब 11वीं क्लास में सल्वेज लेने का समय है। मेरा मन आई.आई.टी. करने का है। मैं यदि आई.आई.टी. की पढ़ाई करती हूँ तो मुझे बाहर ही जाना पड़ेगा और जॉब भी बाहर ही करनी पड़ेगी। अब मेरी समस्या ये है कि मुझे कौन-सा सल्वेज लेना चाहिए। लेकिन बाबा की धारणाओं को देखकर सी.ए. करने का सोच रही हूँ। जिससे मैं घर के शुद्ध वातावरण में ही रह सकूँ। मुझे बाबा की सेवाएँ भी बहुत करनी हैं। कृपया मुझे सुजस्ट करें कि मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आप तो महान आत्मायें हो। महान आत्मायें बनने वाले, पवित्र जीवन बनाने वाले बहुत कम हैं। आप घर में रहकर ही सी.ए. करें। और अच्छी स्टडी करें। सी.ए. का भी मान बहुत होता है और कमाई कम नहीं होती। बल्कि आई.आई.टी. वालों को तो नौकरी टूटनी भी पड़ती है। लेकिन सी.ए. तो करते ही अपना काम पहले ही चालू कर देते हैं। इसीलिए ये फील्ड आपके लिए बहुत अच्छा है। आपकी पवित्रता भी बहुत सुन्दर रहेगी। और आपकी जो धारणाएँ हैं जिसपर आप कायम रहना चाहती हैं उन पर भी आप कायम रह पायेंगी।

प्रश्न : मेरा नाम अमित है। मेरे पिता जी ने अपनी मेहनत से अपनी पूरी प्रांपर्टी बनाई। उन्होंने अपने छोटे भाई को भी बहुत कुछ बनाने की कोशिश की लेकिन वो नहीं बन पाये। उनपर ही डिपेंडेंट रहे लेकिन अब वो मेरे पिता जी के बाद उनकी प्रांपर्टी से हिस्सा चाहते हैं जिसपर उनका कोई हक नहीं है। उन्होंने हमारे ही घर में एक पूजा करवाई थी और उसमें उन्होंने कुछ पुजारियों को, तांत्रिकों को बुलाया था। कहा कि इससे घर में बरकत होगी। फिर पूजा के अंत में पूजा की समाप्ति के लिए उन तांत्रिकों ने सभी घर वालों के थोड़े-थोड़े बाल लिए। उसके पश्चात् हमारे पिता जी की तबीयत खराब रहने लगी। और थोड़े समय के बाद उनका देहांत हो गया। और हर नवरात्रि को घर की स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है। ये स्थिति क्या है हम समझ नहीं पा रहे हैं और इससे निकलने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : आप लोगों को शायद पता नहीं था कि ऐसे बाल आदि देने नहीं चाहिए। इससे उन्होंने तांत्रिक विद्या करा दी। आप घर में ऐसा करें कि पानी चार्ज करें यानी पानी को दृष्टि दें और 21 बार कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। और अपने घर में रोज एक बार छिड़क दिया करें। ये जो बैड एनर्जी आपके घर में

आ गई है वो तेजी से नष्ट हो जायेगी। अगर कोई और भी ये कर रहा हो तो उसके प्रभाव से भी आप मुक्त रहेंगे। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ 21 बार ये रोज अपने घर में बैठकर याद किया करें। ऐसे करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे अंग-अंग से शक्तियों की लाल किरणें फैलने लगी हैं। फिर से दोहरायें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ फिर ये शक्तियाँ और फैलने लगीं। फिर महसूस करेंगे कि इन शक्तियों का और मेरे चारों ओर फैलने लगा है। ऐसे अभ्यास करेंगे तो ये तंत्र-मंत्र की शक्ति इसके आगे बहुत छोटी है। वो तेजी से नष्ट हो जायेगी। और जब नवरात्रि शुरू होने जा रही हो तो उससे पहले विशेष एक घंटा योग करें।

मन की बातें

- राजयोगी डॉ. कु. सूर्य

मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। चार्ज करके पानी सुबह-शाम दोनों टाइम छिड़कने लगे तो ये इफेक्ट आपके आयेगा ही नहीं, ये उनको ही चला जायेगा जो आपको तंग कर रहे हैं।

प्रश्न : मेरा नाम एकता है। मैं छह महीने से योग का अभ्यास कर रही हूँ। मेरी माँ के एक महीने से घुटने में दर्द है। मैं उनको पानी चार्ज करके भी पीलाती हूँ। इसके अलावा मेडिसिन भी दे रहे हैं, लेकिन कोई इम्प्रूवमेंट नहीं हो रही है। कृपया बतायें कि क्या विशेष किया जाये?

उत्तर : आपको क्या करना है तेल को चार्ज कर लें। तेल को दृष्टि देकर 21 बार अभ्यास करें मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर उससे सुबह-शाम घुटनों की मालिश करें और सवेरे-सवेरे अपने घुटनों को दस मिनट एनर्जी दें। और इसकी विधि यही है, हाथों को मलते हुए करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तीन बार करके घुटनों पर हाथ रख दें। तो ये एनर्जी घुटनों के अन्दर चली जायेगी। और सारी चीजों को ठीक करेगी। तो ये तीनों काम तेल चार्ज करना, स्वमान का अभ्यास करना, और एनर्जी देना।

प्रश्न : मेरी शादी को चार साल हो गए हैं। और मेरे जो

पति हैं वो कहीं पर भी जॉब में स्थिर नहीं हो पाते हैं। विदेश से भी उन्हें कई ऑफर मिले हैं कम्पनीज के द्वारा लेकिन पैरेंट्स नहीं जाने देते हैं। कहते हैं कि तुम विदेश जाकर क्या करोगे? हम खुद ही पैसे भेज देंगे। और कई बार जॉब लगती भी है तो ये खुद भी सन्तुष्ट नहीं हो पाते। और ये भी अच्छा नहीं लगता कि हम अपने माता-पिता से पैसे लेते रहें। तो मैं ऐसा क्या अभ्यास कर करूँ जिससे मेरे पति को ऐसी जॉब मिले जिससे वो सन्तुष्ट भी हों और हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति भी अच्छी बनी रहे?

उत्तर : पहले तो आपको ये समझना होगा कि उनकी अनस्टेबिलिटी का कारण क्या है। क्योंकि कई एडजस्ट न कर पाने के कारण किसी भी बात से जल्दी डिस्टर्ब हो जाते हैं, या फिर जॉब का टाइम उनके अनुसार न हो तो इससे फिर वो जॉब छोड़ने का फैसला ले लेते हैं। कईयों की ऐसी मनोस्थिति बनती है। मनुष्य को पहले ही कदम पर मनचाही चीज मिल जाये ये हरेक के लिए सम्भव नहीं होता। मेहनत करनी पड़ती है। तो आप रोज 21 दिन तक मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, इस स्वमान के साथ एक घंटा योग अभ्यास करें। ये स्वमान याद करके फिर अपने पति से बात करें। उनको अच्छे से समझाएं कि एक बार आपको स्टेबल होकर ये कार्य करना है। और आप जो योग करेंगी उसके वायब्रेशन आपके पति को अच्छाई की ओर ले चलेंगे। और वो भी आपकी बातों से सहमत हो जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

CABLE Network

hathway
511 DEN
DeCABLE

GTPL
FASTWAY
QUCN
JioTV

TATA Sky
1065
airtel 678

VIDEOCON
497
dishtv 1087